ऋग्वेद आशीर्वाद घनम्

(संहिता, पदम् , घनम्)

Rig Veda Blessing Mantra
Vol - 1

(Samhita, Pada and Ghana Patha with Swara)
(With meaning in English)

(Rig Veda Praatishaakya in English included)

Author
K Suresh
Qualified in: M.Com,CA,CWA,CS,PGDFTM,DHA - Astrology
Learning: The Veda(s)

Publisher:

LATHA
G2- Kings Manor
No.35/62, 4th Trust Cross Street,
Mandaveli Pakkam
Chennai 600 028 Phone: 91-44-24936697
E Mail:suresh@ghanapati.com
Web Site: www.ghanapati.com

This Book is Dedicated to :

Lord Sri Aanandavalli Ambal Sameda
Sri Kailasanadaswami
and
Sri Sri Devi, Sri Bhoo Devi Sameda
Sri Venkatesa Perumal, Varahur &
Sri Guru Parampara

Price Rs. 200/-
US$ 20/-

Printed by : Maduraa Graphic, Chennai – 600 042.

Blessing Mantra (Vol-1)

Index

	Page Range
About the Author	6-7
About the Book	8-9
Author's Introduction note (Rig Veda Praatishakya & Ashta Vikruties)	10-54

Sl No	Reference	Mantra	Page
1	1.10.11	आ तू न इन्द्र कौशिक	55
2	1.23.24	सं माग्ने वर्चसा सृज	57
3	1.24.11	तत् त्वा यामि ब्रह्मणा	60
4	1.25.12	स नो विश्वाहा सुक्रतु :	64
5	1.31.11	त्वामग्ने प्रथम मायु मायवे	66
6	1.34.11	आ ना सत्या त्रिभि :	70
7	1.37.15	अस्ति हिष्मा मदाय	73
8	1.44.6	सुशम्सो बोधि गृणते	76
9	1.53.10	त्वमविथ सुश्रवसम्	79
10	1.53.11	य उदृचीन्द्र देवगोपा :	82

11	1.58.3	क्राणा रुद्रेभिर् वसुभि :	85
12	1.66.1	रयिर्न चित्रा सूरो न	89
13	1.73.5	वि पृक्षो अग्ने मघवान :	93
14	1.89.2	देवानाम् भद्रा सुमति :	96
15	1.89.8	भद्रङ् कर्णेभि : शृणुयाम	100
16	1.89.9	शतमिन्नु शरदो अन्ति	104
17	1.92.10	पुन : पुन र्जायमाना पुराणी	107
18	1.93.3	अग्नीषोमा य आहुतिम्	111
19	1.94.16	स त्वमग्ने सौभगत्वस्य	114
20	1.96.8	द्रविणोदा द्रविणसस्तु रस्य	117
21	1.113.16	उर्दीर्ध्व ज्जीवो असुर्न :	121
22	1.113.17	स्यूमना वाच उर्दियर्ति	125
23	1.116.10	जुजुरुषो नासत्योत वव्रिम्	128
24	1.116.19	रयिम् सुक्षत्रम्	132
25	1.116.25	प्र वान् दंसांम्स्यश्विनौ	135
26	1.119.6	युवं रेभं परिषूते :	139

27	1.125.1	प्राता रत्नम् प्रात रित्वा	142
28	1.125.6	दक्षिणावता मिदि मानि	146
29	1.127.5	तमस्य पृक्षमुपरासु	150
30	1.132.5	सँ य्यज्ञनान् क्रतुभि :	155
31	1.135.2	तुभ्यायं सोम : परिपूत :	160
32	1.157.4	आ न ऊर्जम् वहतमश्विना	165
33	1.162.1	मा नो मित्रो वरुण :	167
34	2.5.5	ता अस्य वर्ण मायुव :	170
35	2.27.10	त्वं विश्वेषां वरुणासि	173
36	2.32.1	अस्य मे द्यावा पृथिवी	176
37	2.38.5	नानौकाम्सि दुर्यो विश्वम्	180
38	2.41.17	त्वे विश्वा सरस्वति	184